

जाय । हमारी समझ में किसी को यह मानने में आपत्ति नहीं है
 सकती कि बड़ी सौन्दर्य्य उत्कृष्टतम है जो अधिक में यदि
 काल तक हमारी अधिक में अधिक प्रवृत्ति कर सके । मनुष्य
 का शारीरिक सौन्दर्य्य कितने समय के लिए है ? उसका सम्पूर्ण
 लावण्य एक क्षण में नष्ट हो सकता है । इसी प्रकार कुल, ल
 आदि के सौन्दर्य्य का हाल समझिए । बालक के हुँसने में :
 माधुर्य्य है, कन्या की आँखों में सरलता की ओ छटा है वह कि
 भी समय काल-कथलित हो सकती है । परन्तु चन्द्रमा को दुः
 राहत का यह हाल नहीं है, केवल वक्र-कटा वाद्यों में आका
 होने के क्षमरों को छाड़कर साधारणतया वह जब क
 आकाश में प्रकट होगा तभी अपने मन्द हाम में सौन्दर्य्य-रसि
 को उन्मत्त कर देगा । अनन्त काल से वह ऐसा करता आया
 और अनन्त काल तक उसमें ऐसा करने रहने की आशा ।
 उषा, सन्ध्या, वादल, पर्वत, समुद्र, रत्ननी आदि का सौन्दर्य्य
 भण्डार अनन्त काल तक रिक्त नहीं हो सकेगा ।

परन्तु यदि हम मनुष्य के शारीरिक सौन्दर्य्य में ध्यान न
 कर उसके उस सौन्दर्य्य पर दृष्टिपात करें जिसका सम्बन्ध
 उसके मन की विविध समस्तपूर्ण अवस्थाओं में है :
 क्या कोई अन्तर नहीं उपस्थित होगा ? इसमें कोई सन्देह न
 कि मनुष्य के मानसिक सौन्दर्य्य का वर्णन-द्वारा रसाव
 अधिक काल तक किया जा सकता है; उसकी मनोवैज्ञानिक

वस्थाएँ उपा की तरह रंगीन, संध्या की तरह सुन्दर, वादल की तरह मरम और समुद्र की तरह विविध आनन्द-रत्नों की गन हैं ।

किन्तु क्या ऐसा भी कोई सौन्दर्य है जो उपा, मध्या, वादल, पर्वत, समुद्र, रजनी तथा मनुष्य के मानसिक सौन्दर्य की गति रभी परे है, जिसका कभी क्षय नहीं होता, जिसमें क्षण भर के लिए भी परिवर्तन का भय नहीं है । हाँ, यह वह सौन्दर्य जिसने अपने हृदय के रक्त से उपा की सृष्टि की है, अपने वेपाद से अन्धकार में और मन्द ताम से ज्योत्स्ना तथा दामिनी । प्राण-मञ्जार किया है । जिसने प्रभात काल के दूर्वादल को अपने गले का मौक्तिक हार प्रदान किया है जिसने उपहार-रूप । समुद्र को अपना बिम्बार और पर्वत को अपना गौरव दिया है । इसी सौन्दर्य के दर्शन में जीवन की अपूर्णता नष्ट होती है और मानव-व्यक्तित्व इसी के चरणों पर अपने आप को निछावर करके घुनघुन हो जाता है; सौन्दर्य-नमिषता की मारी प्यास यही बुझ जाती है । इस सौन्दर्य का दर्शन करनेवाले की प्रतीक्षा और उकण्ठा का शमन एक बार ही हो जाता है । इस सौन्दर्य में तल्लीन हो जाने के बाद फिर भी जीवन का परम तपस्या का मिट्टि हो जाती है ।

नर क'व मूरतम न स पारम मानव-सौन्दर्य म तृ प्र-लाभ नहीं किया था । यही नहीं । सौन्दर्य के शमक धा । समक' धार

अवस्थाएँ उषा की तरह रंगीन, मध्या की तरह सुन्दर, वादल की तरह मरस और समुद्र की तरह विविध आनन्द-रत्नों की ग्यान हैं।

किन्तु क्या ऐसा भी कोई सौन्दर्य है जो उषा, मध्या, वादल, पर्वत, समुद्र, रजनी तथा मनुष्य के मानसिक सौन्दर्य की गति में भी परे है, जिसका कभी क्षय नहीं होता, जिसने क्षण भर के लिए भी परिवर्तन का भय नहीं है। हाँ, यह वह सौन्दर्य है जिसने अपने हृदय के रक्त में उषा की मृष्टि की है, अपने विषाद में अन्धकार में और मन्द हाम में उद्योत्ता तथा दामिनी में प्राण-मञ्जार किया है। जिसने प्रभात धात के दूर्वादल को अपने गले का मौक्तिक हार प्रदान किया है जिसने उपहार-रूप में समुद्र को अपना विस्तार और पर्वत को अपना गौरव दिया है। इसी सौन्दर्य के दर्शन में जीवन की अपूर्णता नष्ट होती है और मानव-व्यक्तित्व इसी के चरणों पर अपने आप को निहावर करके कृतकृत्य हो जाता है; सौन्दर्य-गमिकता का मार्ग यहाँ नहीं चुन जाता है। इस सौन्दर्य का दर्शन करनेवाले का प्रताप और अकण्टक का शसन एक बार हो जाता है। इस सौन्दर्य में बल्लभ न हो जाने के बाद फिर तो मानव जीवन बेरस का स्वाद ही जाना है।

इस सौन्दर्य के दर्शन में मानव-व्यक्तित्व का विकास होता है। यह सौन्दर्य के दर्शन के द्वारा ही मानव का जीवन अर्थपूर्ण हो जाता है।

ऊपर संकेत किया गया है। इस महा सौन्दर्य का दर्शन हमें श्रीकृष्ण के व्यक्तित्व में किया था। श्रीकृष्ण की चरितार्ति उन विविध सौन्दर्य-राशि में सम्पन्न है जिसके एक अंश को, एक भाग को लेकर बड़े में बड़ा रसिक भी आनन्द में धम्य हो सकता है। ये नन्द-यशोदा के पुत्र, गावियों के प्राण बल्लभ, कम जरासभ आदि राक्षसों के संहारक, और महाभारत के रण-क्षेत्र में ज्ञान के व्यासपाता के रूप में हमारे सामने आते हैं। पुरुषोत्तम श्रीकृष्ण का चरित्र उस अनुदिग्गमो पकाश में परिपूर्ण है जो विभिन्न युगों के अज्ञानान्धकार का विभिन्न किरणों के द्वारा दू कर सकता है। महाकवि मूरदास ने भिम युग में जन्म ग्रहण किया था जमते श्रीकृष्ण के गोपी बल्लभ रूप ही का उद्गमना के युग-भग्ने की, युग-समस्या की परिपूर्ति हो रही थी। विभिन्न युगों का विभिन्न आवश्यकताएँ होती हैं, विभिन्न समस्याएँ होती हैं। मूरदास का समय आज का समय नहीं है। आज की समस्याएँ श्रीकृष्ण का गोपी बल्लभ रूप में बल्लभ हो नहीं हो सकती।

फिर भी यह ना मानना ही पड़ेगा कि राज्य केवल युग-समय के निरूपण और मान में सम्बन्ध नहीं हो जाता यह मार्क्स-मींस और सबका मान मान का मान दिवनी ही अधिक मात्रा में करता है इतनी ही सबक हमें ही स्मृष्टता समझना चाहिए। मूरदास के राज्य-समय में वह समय पूर्णमास के चन्द्रमा की तरह

काव्य-विषय प्रदान कर सकती हैं।

मूरदाम ने श्रीकृष्ण की बाललीला में लेकर उनके द्वायिका-निवास तक की कथा पदों में कही है। उन्होंने उन्हें सगुण ब्रह्म के मानव शरीरधारी अथवा ही क रूप में अंकित किया है, उनकी दृष्टि में श्रीकृष्ण ईश्वर हैं, उनमें दुर्बलता का लेश सम्भव नहीं; वे सर्व-समर्थ हैं और उनकी अलौकिक लीलामें मानवा बुद्धि के लिए अगम्य है। उनके सयोग-शृङ्गार-वर्णन में भी ब्रह्म और प्रकृति का विलास-चिन्तन ही उन्हें वेद-आवेश में डाल देता है। मूरदाम की सी दृष्टि रखने वाले का शायद उन शृंगारिक पदों में भी कोई दोष न दिखायी पड़े। किन्तु फिर भी यह स्वीकार करना पड़ेगा कि सर्व-साधारण के लिए उपयुक्त नहीं हैं।

मूरदाम के व्यक्तित्व जीवन के सम्बन्ध में ठीक ठीक बात बहुत कम ज्ञान है। श्रीरामी वैष्णवा की चर्चा में गाकुत्सन वन और भक्तमाल में नाभाइ म ने उनका चर्चा की है। कथन-कथा के दृष्टांतों के निकटवर्ती सीरी घात निवासों मारकर १८ गय दाम का पुत्र बनल ना है। उनका जन्म कब हुआ १८२५ म काट निश्चित बात कहना कठिन है। उनके १८५० में

१८५० में उनका जन्म म० १८२० में लगभग हुआ होगा। १८५० में २६२५ क लगभग २६५५ व महात्मा बन्धन-चक्र के थे जिनके पुत्र ५५

संगठित करने में, तथा लोकोक्तियों के नगीने जड़ने में मूरदास हिन्दी-साहित्य में तुलसीदास को छोड़कर शेष समस्त कवियों में ऊँचा स्थान रखने हैं।

इस संग्रह का हिन्दी साहित्य के विद्यार्थियों के योग्य बनाने में मैंने कई बातों का ध्यान दृष्टिमान रक्खा है। पद्यों का तो यह है कि मैंने इसमें ऐसे पद नहीं आने दिये हैं जिनमें मुकुमार मस्तिष्क वाले छात्रों पर अशुभ प्रभाव पड़ने का आशङ्क हो। मैं सम्पूर्ण संग्रह का सात भागों में विभक्त किया है; (१) वाचलोला; (२) नन्द-वशादा आदि को पौड़ा; (३) विरहिणी-गोपिका (४) वद्वेष-सदेश (५) मुदामा-जैश्व-निवारण; (६) प्रभाम-मिलन (७) भक्त-का आश्रित। ये सभी विभाग ऐसे हैं जिनमें नव युवको और नव युवतियों के चरित्र को उन्नत बनाने में सहायक तथा कामल सामिक और रमणीय भावों में अलङ्कृत लोभात्तर आनन्द-प्रदायक पदों का संग्रह किया गया है। इस आयोजन में आशा है, पाठक लाभान्वित होंगे।

दारागञ्ज, पयाग

{ गिरजादत्त शुक्ल

बाल-सीता

૧ ✓

માઈ આતુ ને વધાઈ થાઈ નમ્દ નમર જે ।
 પૂને પિરૈ ગોર્ષા ચાલ ટાવ-ટાવ જે ॥૧॥
 પૂલી ધેતુ પૂને ધામ પૂલી ગોર્ષા અગ અગ ,
 પૂને પૂને તરવર આનંદ તાર જે ॥ ૨ ॥
 પૂને દહી-ઝન દારે પૂતા પૂને દન્ડનવારે
 પૂને લાઈ જાદ સાદ ગાકુન સદર જે ॥ ૩ ॥
 પૂને પિરૈ જાઈ કુલ અનંદ સમૂલ મૂલ
 અકુલિત પુન્ય પૂને પાત્રે પાત્ર જે ॥ ૪ ॥
 રમને પ્રમુલ જલ પ્રાપ્તિ-વજ્ર વજ્ર
 રમને વજ્ર મલ મલ મલ મલ ૫ ॥
 રમને રમને રમને રમને રમને રમને ૬ ॥
 રમને રમને રમને રમને રમને રમને ૭ ॥
 રમને રમને રમને રમને રમને રમને ૮ ॥
 રમને રમને રમને રમને રમને રમને ૯ ॥
 રમને રમને રમને રમને રમને રમને ૧૦ ॥

२ ✓

कर गहि पग थेंगुटा मुख मेलत ।

प्रभु पौड़े पालने अकेले, हरपि हगपि अपने रंग खेलत ॥
 सिव सांचन बिधि बुद्धि बिचारन, बट बाह्या सागर जल मेलत ।
 बिडरि च न घन प्रलय जानिकै, दिगपति दिगदत्तौ न संजेलत ॥
 मुनि मन भौत भये भव कपिन संप सकुचि सहसौ फन पेचत
 उन ब्रजवासिन बात न जानी, समुक्ते मूर सकट पगु पेलत ।

२

—

३ ✓

लालन हौं, बारी नेरे मुख पर ।

माई मारिहो डीठि न लागै माने मसि विन्दा दयो भू पर ।
 सबैसु मै पहिले ही दीनो नाहो नान्ही दंतुली दू पर
 अब कहा करी निझावनि मूर जमावनि अपने लालन उपर ।

—

४

लाला हो बारी नेर मुख पर ॥

वृत्तिल अलक माइन मन भवमन, नकुट शकट पकज नैननि पर ॥
 देहै दमाक नैननि वरमन मनु सावन्, यक किय बागज पर ।

दाल-लीला

तधु लधु निर लट घूषग्वारी, रहां लटकि लौनी लिलार पर
 यह उपना कहि कापै आई, कष्टुक सकुचत हौ हिय पर
 नूतन चन्द्रग्न मधि राजति नुर गुन मुक्त उद्योत परसपर
 लोचन लोल कपोल ललित अति, नासिक को मुकारद छद पर
 मुर कहा न्योछावरि करिदे, अवन लाल ललित तर ऊपर

जसोदा मदन गुरान सुवायें (५)

देवि सुवन-गनि विनुवन कौटौ ईन विरंचि भमावै
अमित करन मित आनम कोदन, उमै पनक पर आवै
उनु रविगनि नकुचित कमन जुग तनि अति उड़न न पावै
चौकि चैकि मितु रन। प्रगट हार हाथ मन मे नहि आवै
माने निमबन पर वर आनिारन नहि भहार भमावै
स्वामि ननु, ननु ननु, ननु ननु ननु ननु ननु ननु ननु ननु

६ ✓

कहाँ लौं बरनौं मुन्दरताई ।

खेलत कुँवर कनक आँगन में, नैन निरन्ध्र छवि छाई ॥
 कुलद्वि लसत सिर स्याम सुभग अति, बहुविधि मुरग बनाई ॥
 मानो नवधन ऊपर राजत, मधवा धनुष चढ़ाई ॥
 अति सुदेम मृदु हरत चिकुर मन, मोहन मुरग बगराई ॥
 मानो प्रगट कंठ पर मञ्जुल, अलि-अवली फिरि आई ॥
 नील ध्येन पर पीत लालमनि, लटकन भाल लुनाई ॥
 मनि-गुरु-असुर देव गुरु मिनि मनु भौम सहित समुदाई ॥
 दूषदंत दुनि कहि न जाति अति अद्भुत डक उपमाई ॥
 किलकट हंसत तुरत प्रगटत मनु घन में विनु झिपाई ॥
 मंडित बचन देन पुरन मुख, अन्ध तन्ध जलपाई ॥
 पुटुअन चलत रेनु तनु मंडित मूरदाम अति जाई ॥

— — —

७

वसाह शर पाला नून ।

वसराई दुलारा मरार ॥ १ ॥ मरार ॥ १ ॥ मरार ॥
 मरार ॥ १ ॥ मरार ॥ १ ॥ मरार ॥ १ ॥ मरार ॥
 मरार ॥ १ ॥ मरार ॥ १ ॥ मरार ॥ १ ॥ मरार ॥

कदहुँ पलक हरि मूँदि लेत हैं अघर कदहुँ फरकावैं ।
 सोवत जानि मौन है पैठी करि करसैन बनावैं ॥
 इहि अन्तर अकुलाइ छे हरि अनुमति मधुरै गावैं ।
 जो मुख मूर अमर मुनि दुर्लभ नां नैद भामिनि पावैं ॥

जमुनन मन अभिलाष करै ।

कब मेरो लात घुदुरुअन रँगै कब घरनी पग टूँक घरै ॥
 कब द्वै दन दूष के देखौ कब तुनरै मुख दैन भरै ॥
 कब नन्दहि कहि बाधा बोलै कब जननी कहि मोहि ररै ।
 कब मेरो अँधरा गहि मोहन जोइ मोइ कहि मोमो भगरै ॥
 कब घौ तनक तनक कहु नैहै अपने करसौ मुखहि भरै ।
 कब हँसि यात कहेंगे मोसौ छवि पैनन दुख दूरि करै ।
 म्याम अचले आँगन छाँड़ि आपु गई कहु काज घरै ॥
 एहि अन्तर अँधवारि उठाई इक गरजन गगन महित घरै ।
 नय ब्रज लोग मुनन धुनि जाँ जहँ तहँ सब अनिहि हरै ॥

एह कहेना... नय क' मेर' वनन 'अन्ध'...

अन्ध'... नय... क' दे' क'...

याग धार बकि भ्याम सां कछु योल बकावत ॥
 दुहुंथा राउ देतुला भई अनि मुख छवि पावत ॥
 कबहुं कान्ह कर छाँड़ि नैंद पग टैंकरि घावन ।
 कबहुं धरनि पर बैठि मन महें कछु गावन ॥
 कबहुं उलटि बल धाम को छुटुअन करि घावन ।
 सुरस्याम मुख देति महर मन हरष बढ़ावन ॥

1. *Journal of the American Medical Association*, 1997; 278: 1039-1044.

20 ✓

चट्ट मिलौना लैहों मैया मेरो चट्ट मिलौना लैहों ।
 धौरी को पय पान न करिहों बेनी सिर न गुथैहों ॥
 मोतिन माल न धारिहों उर पर भैंगुनो कंठ न लैहों ।
 जैहों लोटि अथइ धरनी पर तेरी गाद न पेटौहों ।
 लाल कहैहों नन्द बवा सौ तेरा मुन न कहैहों ॥
 कान लाय कल कहनि समादा नाउनि नाहि गनैहों ।
 नम्रा न ले आन गनरा नाह नमन दूनि न येहों ।
 न न भौ मेरो ना न अरन न न न न न ।
 मरन म मर मर मर न न न न न न न न न न न

११ ✓

लेहों री मा चदा चहोंगो ।

कहा कर्गे जलपुट भीतर को बाहर आंकि गहोंगो ॥
 यह तो मलमलात मकरंभरत कैमे कै जु लहोंगो ।
 वह तो निपट निकट ही देखत घरआ हों न रहोंगो ॥
 तुमरो प्रेम प्रगट मै जान्यो योगए न चहोंगो ।
 सूरस्याम कहै कर गदि ल्याऊँ ससि तनुनाप रहोंगो ॥

— — —

१२ ✓

मैया मेरी, मै नहि मान्यन ल्यायो ।

भोर भयो गैयन के पाँछे मधुवन माहि पठावौ ।
 चार पहर दसीदट भदकयो माँझ पर पर आवौ ॥
 मै चलरु घदियन का छाँटो छाका किनि दिव्य पावौ ।
 ग्याकदल मरु वैर पर ॥ घरम मरु लउट गे
 न चला न चला

.....

.....

नृ जो कहति बल की देती ज्यों है ही लांघी मोटी ॥
 काढ़त गुह्य नहावन पोंछत नागिन सी भूँ, छोटी ।
 काँधों दून विधावति पुचि पुचि देति न माग्यन गौरी ।
 मृगमय विजोबी दोउ मैया हरि-हलधर की जोटी ॥

१६ ✓

मैया, मोहि दाऊ बहुत विनायो ।

नामो कहत मोर की लीनो, नृ जमुमति कह जायो ॥
 कहा कहौ यदि मिस के मारे, खेलन ही नहि जातु ।
 पुनि पुनि कहत कौन है माना, को है तुमरो नातु ।
 गोरं नन्द जमोदा गारी तुम बत म्याम करीर ।
 चुटुकी है है हंसन ग्वाल नन्द, मिरर देत दलदोर ॥
 नृ माफो का नारन मायो दाउहिं बधुते न मरि नै ।
 नाहन की मुग्य भस समेत लीर उममान मान मान रानै
 नन्द ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥
 नन्द ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥

जो न पस्याहि पृथि धनदाउहि, अपनी मौद् दिवाइ ।
 यह मुनि मुनि जसुमनि श्यालन कौ, गारी देनि रिमाइ ।
 मैं पठयनि अपने करिका कौ, आवै मन यहराइ ॥
 सूरस्याम मेरो अनि बाधक, मारन ताहि रिगाइ ॥

१८ ✓

दे मैवा भैवरा नकडारी । ✓

जाइ नेदु आरे पर राख्यो काल्हि मान लै राख्यो कारी ॥
 लै आवै होनि म्याम नुरत हा दोख रह रैत रैग यहु डोरी ।
 मैवा बिना और का राख्ये बार बार हरि कदन निहारी ॥
 बालि निदे सब मया मंग व सेवन म्याम नन्द को पौरी ।
 नेमहु हरि मैगई सब बालिक कर भैवरा-नकडारी ।
 दसव जनान नमाना ॥ १८ ॥ य विजयो बाबराइ मूय भाग
 मारनाय ॥ १८ ॥ दे म म्म नन न ॥ १८ ॥ १८ ॥ १८ ॥

तुमहि मिले मैं अति मुख पायो मेरो कुँशर कहैया ।
कलुक ग्याहु जो भावै मोहन, देखिहुँ माखन राटी ॥
सुरदान प्रभु जाँवहु जुग जुग हरि-हलधर की जोटी ॥

20 ✓

आइने में गाड़ चरावन डैहों ।

दृग्दशन के भाँति भाँति फल अपने करते गँहो ॥
 गँहो अशहि कहाँ जनि धारे, देखो अपनी भाँति ।
 नानक ननिक पाँडि चलिहो कैमे आवन हो है गति ॥
 प्रात ज्ञान गैयाँ तै आन पर आवन हो साँनि ।
 नुम्हरो कमल बदन कुम्हिलैहो रंगत घामहि साँनि ॥
 तेरो भौ माहि घामन लागत भुन नही कछु नेक ।
 दृग्दशन प्रभु कर्यो न मानत परे आपनी टेक ।

22

THE UNIVERSITY OF CHICAGO

[illegible]
$$\frac{d}{dt} \left(\frac{\partial L}{\partial \dot{x}} \right) = \frac{\partial L}{\partial x}, \quad \frac{d}{dt} \left(\frac{\partial L}{\partial \dot{y}} \right) = \frac{\partial L}{\partial y}, \quad \frac{d}{dt} \left(\frac{\partial L}{\partial \dot{z}} \right) = \frac{\partial L}{\partial z}$$

“हम कानून का विरोध नहीं करते, हम केवल इस विरोध में हैं”

सूर-सहाय्यो

मुनः सुमहानि कानि उरु कानः,
 अमुत्र सुवि उपजायते ।
 मरुतश्च अह विगमिन वा द्रवि पर,
 अनुदिन जनमे गैवायते ॥
 यत्न नदी मुष्मन् श्याम को,
 यद्यपि जनधर ध्यायते ।
 यमन समान दान नदि हाटक,
 अस्मि भार्ये आचरते ।
 मुहतादाम विसाकि विमन्त्रि करि,
 अत्रनि वलाक धनयते ।
 सूरदास धनु ललित विभर्षी,
 मनमथ मनःक सतायते ॥ ✓

५

५

५

५

10

सूरदास धनु ललित विभर्षी, मनमथ मनःक सतायते ॥

सूरदास धनु ललित विभर्षी, मनमथ मनःक सतायते ॥

सूरदास धनु ललित विभर्षी, मनमथ मनःक सतायते ॥

सूरदास धनु ललित विभर्षी, मनमथ मनःक सतायते ॥

तेहि जु अग अवलोकन कीन्हो सो तन मन तहोटी विरसावन ।
नुरदान प्रभु मुरली अधर धरे आवन राग कल्याण बजावन ॥

+

२६

मेरे नयन निरग मचपार्थ ।

नलि नलि जाहे मुरारिदि की घनने पुनि मज जाये ॥
मुजावन लखन मुरारिदि की वेगु मयाल मयाये ।
धोति विरगि मुरारि मे जो प्रकाशत मुरारि ददन लजाये ।
नरदर मर दनुष लखीला मरदिन के मन भाये ।
नुरदान प्रभु खलन मरदिन विरगि ताप मयाये ॥

+

+

+

२७

वलि वलि जाहे मुरारिदि की घनने पुनि मज जाये ॥
मुजावन लखन मुरारिदि की वेगु मयाल मयाये ।
धोति विरगि मुरारि मे जो प्रकाशत मुरारि ददन लजाये ।
नरदर मर दनुष लखीला मरदिन के मन भाये ।
नुरदान प्रभु खलन मरदिन विरगि ताप मयाये ॥

माधो जू के तन को शामा कहत नाहि बनि आवै ।
 अचरन भादर लाधन गुट दाउ मनु नहि लुपिता पावै ॥
 मगन मंच अतिशयाम सुभग यपु तदित वसन वगमान ॥
 मिर शिखर नखवानु विराजत सुमन सुरंग प्रवाल ॥
 कन्दुक कुटिल कमनीय गघन अनि गोरज मडित बेश ।
 अचुत रुधिर पराग पर मानो राजन मधुर सुरेश ॥
 कृ दल लाल कपास निरणि गगु नैन कमल दल मीन ।
 अधर मधुर मुमकाने मनाहर करन मदन मन हीन ॥
 प्रति मान अग अनग काटि छवि सुन मर्गी परम प्रवीन ।
 मूर दृष्टि जह जह परान तहो तहो रहति छै लीन ॥

२९

V. 9

इक दिन हरि हलधर मीन मालिन ।
 मान जाने सोधन बन चारन ॥
 कोउ लावन कोउ वेगु बजावन ।
 कोउ मिला कोउ नाद गुनावन ॥
 लखन लीन लल बन महिया ।
 चरन जगु विन दिन सब लीन ॥

हरि ग्वालन मिलि खेलन लाये ।

सूर अमंगल मन कं भाये ॥

+

+

+

३०

घने हैं दिवाल कमल फल मैंन ।

नाह मे अनि चाह दिलावनि गुरुभाव सुखन मगि मैंन ॥

बदन मंगोज निजत छुलित पन मनाह मधुष क्वाह मधु हैंन ।

निलज मरति मागि बदन बहुरा हीन कोलन मधुर मनोहर हैंन ॥

मदनगुरनि का देग मदानद सुध कल समि न सकन कर हैंन ।

सुरदास मधु दूत 'दली' दिन पम्बन चरित सुनोनी हैंन ॥

+

+

+

३१

दलात रुदन दिलावन कायदेन कदकन हैं कलुषास ।

हरति हार कलपन बहाने नि दिहन धिष्ट पदम ॥

ता'वन कोलन नद क दल वीन लल मधुकर मंग

मनाह कानि कहर दिने बहाने निहन कोलन

दीवाना मधु दूत मधु मदन दिनु कल

कानन कोलन मधु दूत क दिवाना मधु दूत

३२ ✓

कुचिन केर्म मयूर चन्द्रिका महल मुमन सुषाग ।
 मानहु मदन धनुष शर लीन्हें धरपत है घन बाग ॥
 अथर्विग विहैमान मनोहर माइन गुरली राग ।
 मानहु गुभा पयाचि पैरि घन प्रज पर धरपत लाग ॥
 कुडल मकर कपोलनि भलवन अग मीकर के दाग ।
 मानहु मीन मकर मिलि कोकन शाभिन गरद तदाग ॥
 नागा निष्कक प्रमून पदविधर विधुक्त बाह चित मग ।
 वाहिम दशन मंदगनि मुमकनि मोहत मुर नर नाग ॥
 श्रीगोपाअ रम रम मरी है मूर मनेह मोहाग ।
 ऐसी शोभा विधु विलोकन इन औमियन के बाग ॥

+

+

+

३३

गुनहु मयो में कुमनि तुमको काहु हरि का रंगे है ।
 है का नन कैसा रंग देखियन कैसी विधि करि अंगे है ॥
 कैसा मृदु नृपिष कय रंगे मुखम भास भुव भीके है ।
 कैसा नेन नमिका कैसा अवलनि कुडल पी के है ॥
 कैसा आन नगन दुनि कैसा विधुक्त बाह चित मोहन है ।
 कैसा नर नमन कहु नन कैसा वदन विकारन है ।

कैसी जगमाला है शोभित कैसी मुखा धिराजन है ।
 कैसे कर पहुँची है कैसी कैसी अँगुलिआ राजत है ॥
 कैसी गोमावली श्याम के नाभि चारु कटि मुनियत है ।
 कैसी कनक मेखल कैसी कलनी नहि मन गुनियत है ॥
 कैसे जंघ जानु कैसे हाँउ कैसे पद नहि जानति है ।
 मूरस्थान अँग अँग की शोभा देखे की अनुमानति है ॥

x

x

x

३४ ✓

ऐसे सुने नन्दकुमार ।

नन्द निरन्ध्र शशि कौटि वागत चरण कमल अपार ॥
 जानु जव निहारि रंभा करनि दारत बारि ।
 कालनी पर प्राण वारत देखि शोभा भारि ॥
 कटि निरन्ध्र तनु सिंह वागत किकिनी जु मगल ।
 नाभि पर हृद आपु वारत गोमावली अलिमाल ॥
 हृदय मुकुतामाल निरन्ध्र वागत अवलि बलाक ।
 कनक कर पर कमल वागत चलति जहाँ नहीं साक ।
 मुँह पर वर नाग वागत गले भाँग पनाल ।
 जंघ की चरन नहा रहे कल्याण पदम रमल ।
 पदक पर चरन वारत मदन अरु अरुन नन ।
 वरक विदुस विद वारत मदन अरु अरुन नन ।

वचन मुनि कोकिला वारत दशन दामिनि कानि ।
 नामिका पर कीर वारत शारु लोचन भानि ॥
 कज स्वजन मीन मृग शावकनि डारति वारि ।
 भ्रुकुटि पर मुर चाप वारत तरनि कुण्डल डारि ॥
 अलक पर वारत औंध्यारी तिलक भाल सुरेश ।
 मूर प्रभु मिर मुकुट धारे धरे नटवर मेघ ॥

x

x

✓x

३५ ✓

ऐसी बिधि नन्दलाल जात मुने माई री ।
 देखे प्रो नैन रोम रोम प्रति मुमाई री ॥
 बिचि ने दुँ नैन रच्य अग टानि ठान्यो ।
 लोचन नहि' बहुत दिये जानिकै मुलाख्यो ॥
 अनुरता प्रवीनता विमाना को जानै ।
 अथ कैव लगत हमहि जात न अयाने ॥
 त्रिभुवनवनि मदन काट्य नटवर कपु काट्ये ।
 हमका डै नैन दिये नह नहि आख्ये ॥
 लला 'व । का 'ववक कनी नहा बाको ।
 लला 'ववह । ई न । का 'ववव नहा ॥

३६

मुख पर चन्द्र द्वारों धारि ।

कुटिल कच पर भौर धारों भौह पर धनु धारि ॥
 भाल केसरि तिलक छवि पर मदन शत शर धारि ।
 मनु चली बहि सुधा धारा निरखि मनधों धारि ॥
 नैन खंजन मृग मीन धारों कमल के कुलंधारि ।
 मनो सुरसति यमुन गंगा उपमा द्वारों धारि ॥
 निरखि कुंडल तरुनि धारों कूप शवननि धारि ।
 भलक ललित कर्पोल छवि पर मुकुन शत शत धारि ॥
 नामिका पर कीर धारों अधर विद्रुम धारि ।
 दशन एकन यज्ञ धारों धौज दाडिम धारि ॥
 चिबुक पर चित विल धारों प्राण द्वारों धारि ।
 मूर हरि की अंग शोभा को सकै निरधारि ॥

+

+

+

३७

चौसरी विधिहु ते प्रवीन

कहेय कहि आह कर गेमा कियो जगत आचान ॥
 चारि बदन उपदेश विधाना थापा धर चर नान
 आठ बदन गरजान गरबानो क्या बालन यह शान ॥

विपुल विभूति लई चतुरानन एक कमल करि धान ।
 हरि-कर-कमल जुगल पर पैठी पाद्यों इह अभिमान ॥
 एक बेर भीषति के सिन्धवे उन लियो सष गुन गान ।
 इनके नौ नन्दवास लाहिलौ, लग्यो रहैल नित कान ॥
 एक मगल पीठ आरोहन, बिधि भयो प्रवज प्रसम ।
 इन नौ सकल विमान किए, गोपीजन-मानम हंस ॥

वैकुण्ठनाथ-उर वामिनि चाहत जा पद रैन ।
 नाकी मुख मुख्यमय मिहामन करि पैठी यह ऐन ॥
 अवर मुग पी कुप्रमन टायो, नहीं भिन्ना नहि तान ।
 तद्वि सूर जा नन्द मुखन की जाही मो अनुराग ॥

x

x

x

३८

नैना मंद वर क पोर ।

वन लहि कष्ट बने इनहीं, मय छवि मय भार ॥

नही अंगन नही मरन मय न ग प्रकाश ।

कनक रंग बने मय नर ॥ १ ॥ अम ॥

..... मय रीत ।

..... ॥ १ ॥

नटवर भेष धरे प्रज आवत ।

मोर मुकुटमकराकृत कुण्डल कुटिल अलक मुख पर ह्यधि पावत ॥
 भृकुटी विकट नैन अति खंचल यह ह्यधि पर उपमा डक धावत ॥
 धनुष दंभि खंजन विधि दरपत उड़ि न सकत उठिये अकुलावत ॥
 अथर अनूप मुरलि-सुर पूरत गौरी राग अलाप धजावत ॥
 सुरभी वृन्द गोप बालक संग गावत अति आनन्द बढायत ॥
 कनक मंग्यला कटि पोतावर नृत्यत मंद मंद सुर गावत ॥
 सूर स्याम प्रति अग माधुरी निरखत प्रज-जन के मन भावत ॥

राम-रस-गीति नहि बरति आवै ।

कहो वैसा वृद्ध कहो बर मन

नहीं रहा जी विन निरखे जन गुल वै ।

तो कहो कोन नानि निरखे दगम जा

ऊरु विन नही ना रस-रस रस

भव सा भजै विन नाव स न नही

भव ही माह भाव जग बस वै

जहै निज मथ जह ग्यान जह ध्यान है,
 दरस दपति भजन-मार गाऊँ ।
 जहै माँगौ बार बार प्रभु मूर के नैन शोच,
 रहै, अह नित्य नर-देह पाऊँ

— — —

४१ ✓

अदभुत कौमल देखि समी री, भी वृन्दावन होइ परी री ।
 उन पन उदित महित मौदामिनि, इन मुदित राधिका हरी री ॥
 उन पन पाति शोभित इन सुन्दर धाम विद्याम सुदेम खरी री ।
 उन पन गगन इहाँ गुरुखी धुनि, जलधर उन इन अमृत भरी री ॥
 जगहि इन्द्र धनु इन बनमाया, अनि विचित्र हरिकण्ठ धरी री ।
 मूर माथ प्रभु कृँअरि राधिका, वरन की मोखा दूर करी री ॥

— — —

कृष्ण-प्रवास तथा नन्द-
यशोदा आदि
की पीड़ा

1

४२ ✓

मधुरापुर में शार पश्या ।

गजन कम वंश सद नाजे, मुख का नीर हरया ॥

पारी भया फेफरी अधरन हृदय अतिदि हरया ।

नद महर के सुत दाउ सुनिकै नारिन हप भरया ॥

इन्दु बदन नव जलद सुभग ननु दाउ रंग नैन कया ।

नूर श्याम देखत पुर नारी उर उर प्रेम भरया ॥

2

४३ ✓

रथ पर देखि हरि दलराम ।

निरखि कामल चरु नृगनि हृदय मुकुता दाम ॥

मुकुट कुटिल प - उर उर अलुल अत श्या

राज. निरु - न क कुटिल नारननु सुखय

उने न केम नरय नर न काल लप पुर्व

बाल उरय कम इन्क नर न केम के

जोरि कर विधि सों मनावनि लै अरौरी नाम ।
 न्हान बार न स्वमै इनका सुनात पहुँचै धाम ॥
 कम का नियँश द्वैद करत इन पर ताम । जे
 मूर प्रभु नदसुवन दाँउ हंस बाल उपाम ॥

४४

देख गी आजु नैन भरि हरिजु के रथ की शोभा ।
 योग यज्ञ तप तप तीरथ घन कीजन है जेहि लोभा ॥
 चारु चक्र मणि स्वचिन मनोहर चचल चमर पनाका ।
 खेत छत्र मनो गशि प्राची दिशि उदयपियां निगिराका ॥
 घन तन श्याम सुदेश पीत पट शीश मुकुट उर माला ।
 जनु क्षामिनि घन रवि तागागण प्रगट एक ही काला ॥
 नयन छवि कर अंगर शम्भुमिनि सुनियन शब्द प्रशंसा ।
 मानदु अरुण कमल मङ्गल में वृजन हैं कल हँसा ॥
 मदन गावान देनियन हैं मय अब दुख शाक बिसारी ।
 पैटे हैं मुकुलकमुत गाकुल नैन जा इरी मिचारी ॥
 आनंदित चित जननि नान दित कृष्णमिन्नन त्रिय भाए ।
 मूरनाम वदकुल दिन कारण माग मधुपुरि आए ॥

४५

वे देवो आवत हैं ब्रज ते धने धनमाली ।

धन तन श्याम मुखे पौन पट सुन्दर नैन विशाली ॥
जिनि पहिले पलना पौंदे पय पौवन पृतना दाली ।
अथ बक बन्ध अरिष्ट केशी मणि जल ते काटयो बाली ॥
जिन हात शकट प्रलय नृणावृत इट्ट प्रनिहा दाली ।
एते पर नहि नजन अयोड़ी पपटो कम कुचाली ।
अथ विधु बदन विलोकि सुलोचन भवण मुनन ही आली ।
धन्य सुगोकुल नारि मूर मनु प्रकट प्रीत प्रनिपाली ॥

४६

एई भावो जिन मधु मारे नी ।

जन्मत ही गोकुल सुख दीन्हों नंददुलार बहुत सारे री ॥
केशी नृणावर्त्त वृषभासुर हती पृतना जब धारे री ।
इट्ट कोप बर्षत गिरि धारथो महाबल ब्रज टारे री ॥
बल समेत नृप कम बालाये रचे रङ्ग अति भारे री ।
मूर अशीश दिन सब सुन्दरि जावाह अपनी माँ प्यारे री ॥

४७ ✓

भये मन्त्रि नैन मनाथ हमारे ।

मदन गोपाल देख्यन ही सजनो सब दुख शोक विमारे ॥
 पठ्य है मुकुलकमुन गोकुल लेन जो इहाँ मिचारे ।
 मज्ज युद्ध प्रति कम कुटिल मनि छल करि इहाँ हैंकारे ।
 मुष्टिक अरु घातूर शैल सम सुनियत है अनि भारे ।
 कामल कमल समान देखियन ये यशुमति के बारे ॥
 है यह जीनि विमाना इनको करहु महाय मवारै ।
 सूरदाम निरजीवहु युग युग दुष्ट दलै दोउ नंददुलारे ॥

✓

४८ ५-

मोर मयो जोगी नंदलास ।

नदराट निरम्यन मुख हरये पुनि आये सब ग्वाल ॥
 शैल पुरी अति परम मनाहर कषन कोट विशाल ।
 करन भग सब गुर प्रभु सा दार इहाँ भूपाल ॥

✓

तब बोले हरि नंद सों मधुरे करि बानी ।
 गगं वचन तुम ने कही नहि निहचै जानी ॥
 मैं आयो समार में मुख मार बतारन ।
 तिनको तुम घनि घन्य हो कीन्हों प्रतिभारन ॥
 मानु पिता मेरे नहीं तुम ते अरु कोऊ ।
 एक बेर ब्रज लोग को मिलि हो मुनौ मोऊ ॥
 मिलन डिलन दिन चारि को तुम तो सब जानौ ।
 मो को तुम अति मुख्य दियो मो कदा बस्यानौ ॥
 मधुरा नर नारी मुनै व्याकुल ब्रजवासी ।
 सूर मधुपुरी आडकै ए भए अधिनासी ॥

+

+

+

निठुर वचन त्रिनि कही कन्हाई ।
 अतिही दुख मया नहि जाई ॥
 तुम हेमिकै बालन ए बानी ।
 मर नयन भरन हे पानी ॥
 अरु ए बाल बबहु त्रिनि बाली ।
 दुरत बाली मन आगन दाली ॥
 पथ नहारन यशुमति हेरे ।

कैहों कहा जाइ यशुमति सों जय सन्मुख उठि ऐहैं ।
 प्राण समय दधि मयत छाँड़िकै काहि फलेऊ देंहैं ॥
 बारह वर्ष दयो हम ठाढ़ो यह प्रताप बिनु जाने ।
 अब तुम प्रगट भए समुदेखसुत गरबचन परमाने ॥
 कन हम लागि महारिषु मारे कत आपदा बिनासी ।
 छारि न दियो कमल कर ते गिरि दधि मरते प्रजवासी ॥
 वासर मंग सखा सब लीन्हें टेरि न धेनु खरैहौ ।
 क्यों गहिहैं मेरे प्राण दरश बिनु जय संध्या नहि गेहौ ॥
 अब तुम राज्य करौ कांटिक युग मातपिता मुख दैहौ ।
 कबहुँक तान नात मेरे मोहन या सुग्य सो सो कैहौ ॥
 ऊरध रथाम खरण गति भाक्यो नैनन जोर न रहाइ ।
 मूर नंद बिदुरे की वेदन सो पै कहिय न जाइ ॥

+

+

+

५४ ✓

वर्ग प्रन का । वर्ग नंदगड ।

हमारे तुमारे मन नात का नाता और परचा है आइ ॥

बहुत किया प्रीतपास हमारा मा नहि जाने जाइ ।

वही रहे नहि नदी तुम्हारे द्वारा जितन बिमगाइ ॥

कहियो जाइ यरोदा आगे नैन नीर जिनि दारौ ।
 सेवा करी जानि सुन अपने कियो प्रतिपाल हमारौ ॥
 हमैं तुम्हें कछु अंतर नाही तुम जिय ज्ञान बिचारौ ।
 मूरदास प्रभु यह बिनती है उर जिनि प्रीति विमारौ ॥

+

+

+

५७

मेरे मोहन तुमहि बिना नहि उहौ ।
 महरि दौरि आगे जब ऐहे कहा ताहि मैं कैहौ ॥
 मानन मयि राख्यो द्वैहे तुम हेतु चली मेरे वारे ।
 निटुर भए मधुपुरी आइकै काहे असुरन मारे ॥
 देस पायो वसुदेव देवकी अरु सुख मुरन दियो ।
 यह कहत नैव गोप मया सब विदरन चहत दियो ॥
 तब माया जइना वपजाई ऐमो प्रभु यदुराई ।
 मूर जन्म वरबोधि पठावत निटुर टगोरी जाई ॥

+

+

+ ✓

५८

तत्पदि कहत वरि प्रज न ह

‘कानक मयूर’ मतीर अन्तर प्रिय क

आ बालक होत अविद्या दूरीतुं हूँ जात ।
 निरुद्ध ने हन बरतो नानि लोन्ही जात ॥
 नर नर कर जोरि लड़े तुम को प्रज जात ।
 नर नर नर जात बाली निद नही हूँ जात ॥

५९

तुम मेरी प्रभुता बहुत करो ।
 नर नर नर नर नर नर नर नर नर नर नर ॥
 नर नर नर नर नर नर नर नर नर नर नर ॥
 नर नर नर नर नर नर नर नर नर नर नर ॥
 नर नर नर नर नर नर नर नर नर नर नर ॥
 नर नर नर नर नर नर नर नर नर नर नर ॥

६०

नर नर नर नर नर नर नर नर नर नर नर

नर नर नर नर नर नर नर नर नर नर नर
 नर नर नर नर नर नर नर नर नर नर नर
 नर नर नर नर नर नर नर नर नर नर नर

હુ મુખિ મ રહી તન બી જહુ ભખતીત પહે પદિ ।
 હુસ ખાત બિરત પુનિ મધુનન મન પુનિ જતિ અભાદ ॥
 રદ મિત્રુ મે પે એત બિત મેરોદિ બલે અદાદ ॥
 ર રવામ અલવામ દીદિવે મન અમા નિયમાદ ॥

૬૨

આર આર મન તજતિ માગા ।

રવામુના મિત માતલ અભ અભા ॥

આવત ગમિ વાપ રીદ માયા ।

દિલ માલમ મિમ મદ અભા ॥

મદ પનુ મદર તમા

મામલ દિના રો તા દે

મનમારી દરખિત મન પે

માતિ દર્દી નર અભાદ અ

દરદિત માન તાલમા

રો માત દરમા ૧૯

દરમા માત માત

૨૦ ૨૧ ૨૨ ૨૩ ૨૪

સૂર-વદાનખી

હાંદુ તિલા પદ આદુ મુનાઈ માને રહિય જાન ॥
 ડાહી ધવયો વતર નદિ ખાઈ જાજન ગ્રામ ન સમાન ॥
 બાવ જલદાન સ્ત્રીન તનુ કથિત ગ્યોં બધારિ લગ પાન ॥
 રક્ષાજાન મન વદુન મૂર પઠિ જને નદ વલિનાન ॥

૧૧

નિહિત જાતિ નદ ન વતર સીટકોં ॥

વતર જાન મરિ જાન વતર મુરિ માનદે વિન તિલિ જાટકોં ॥
 વતર મા વતર મા જાતિ જાઈ મુર નુર જાન જાન જાન ॥
 જાન મા જાન જાન જાન જાન જાન જાન જાન જાન ॥
 જાન જાન જાન જાન જાન જાન જાન જાન જાન ॥
 જાન જાન જાન જાન જાન જાન જાન જાન જાન ॥
 જાન જાન જાન જાન જાન જાન જાન જાન જાન ॥
 જાન જાન જાન જાન જાન જાન જાન જાન જાન ॥

૧૨

જાન જાન જાન જાન જાન જાન જાન જાન જાન

જાન જાન જાન જાન જાન જાન જાન જાન જાન

काहू सुधि न रही तन की कछु लटपटात परे पाँइ ।
 गोकुल जात फिरत पुनि मधुवन मन पुनि उतहि चलाइ ॥
 विरह मिन्धु में परे चेत विन ऐसेहि चले बहाइ ।
 सूर श्याम बलराम झँड़िकै ब्रज आए नियराइ ॥

६३

धार धार भग जोषति माता ।
 व्याकुल दिन मोहन बल भ्राता ॥
 आवत देखि गोप नैद साधा ।
 विवि बालक विनु भई अनाथा ॥
 धाई धेनु बन्द्य ज्यों ऐसे ।
 माखन बिना रहें बां कैसे ॥
 ब्रजनारी हरपित सब धाई ।
 मदरि जहाँ तहें आतुर आई ॥
 हरपित मान रोहिणी धाई ।
 उर भरि हलधर लेहुँ पन्दाई ॥
 देखे नट गोप सब देखे ।
 बल माखन का तहाँ न देखे ॥
 आतुर निलन पाँइ ब्रजनारी ।
 नर मधुवन रहें सुरगारी ॥

रनाम राम गगुरा लति नंद अमदि आन ।
 बार बार मरि कहति जनम भुग करान ॥
 कहुँ बनति सुनी मदी दरारथ की करानी ।
 सब सुनि नंद कयादुल है पदे गुरदि घरनी ॥
 मेरि देखि गुरुमि परनि कयादुल अजनानी ।
 गुरच प्रभु कीन दाग हन को नु बिमारी ॥

— — —
 ६५ ✓

इति नम नैम कीर्त्तनी नंद ।

उदि कहुँ प्रभु गुरु साजन गुरु जीवन सति मर ।
 हे गुरु पर साजन मजभागे कै गुरु हरे वर ।
 गुरुचरणन पैरी मजभागे को औ गुरु आनंददर ।
 मजभागे कित कैस मारी कहिन जीवन क प्रभु ।
 गुरुचरणन पैरी मरि आन ॥ नि गुरु पिन सादुच बन ।

६६

गुरुचरणन पैरी मरि कहुँ नंद नंद

गुरुचरणन पैरी मरि कहुँ नंद नंद गुरुचरणन पैरी मरि कहुँ नंद नंद

मिन्हें जात बहुत दुख पायो गैरि परो यहि खेरे ।
 सोनुन गाइ पियन है दह दिश बने चरित्र न धोरे ॥
 सोनिन बरी गम-दशम्य की प्राण सजे दिन हरे ।
 सो नन्द सो बहनि यशोदा प्रचल पाप सब मेरे ॥

६७

यशोदा बान्ह बान्ह ये धुनै ।

पटि न गहं निहारो पारो बैसे मारग सुनै ॥
 १३ तनु जरी जात दिन देखे खूब सुम दोने पृथ ।
 का हलिया मेरे सुँवर बान्ह दिनु पटि न गह दै हक ॥
 पुन हनु धुन दै बान्ह कटो पले बान्होन्नत पटि धात ।
 सो यशोदा बान्हन की हस दै देत बधार्ह कान ॥

६८

बह बहि सुनसी बह बह ॥

सो बह बहि सुनसी बह बह ॥
 सो बह बहि सुनसी बह बह ॥
 सो बह बहि सुनसी बह बह ॥
 सो बह बहि सुनसी बह बह ॥
 सो बह बहि सुनसी बह बह ॥

सुधि न रही अति गलित मान भयो अनुद्धमि गयो अयो ॥
 कृष्ण छाँड़ि गोकुल कत आए धाम्यन दूष रयो ॥
 तजे न प्राण सूर दशरथ लौ हुनो जन्म निवजो ॥

+

+

+

६९ ५ १

मेरी अति प्यारी नैद नंद ।

आए कहीं छाँड़ि मुम उनको सोच करी मति मंद ॥
 बल मोहन बोंड पीड़ नयन की निरगत ही आनंद ।
 भरघर सोच कुमाँदिति जत जन, रगाम भक्त बिन रंद ॥
 कारे न गई परे वसुदेव के पालि पाग मरे कंद ।
 मूरदाम प्रभु अचके पश्यहु गकल लोक मुनिवन्द ॥

C

७०

✓

मन नू मारिचोई करति

मिमति आगे कटि वा आगत अक ते मीन मरान
 ममई का नीवरी ते मिरान ॥ ॥ ॥ ॥
 कृष्ण द्विज बाँध नय ता बँधन अक तय काँध काँध

नृपति कस धुनाइ पठयो बहुत कै जिय हरति ।
 इव यद् विपरीत मो मन माँझ देखी परति ॥
 गानहारो दोइह सोइ अथ यही कत अरति ।
 मूर तथ कित पैरि राखेइ पाइ अथ केहि परति ॥

७१

वत्स तयायो तजि प्राण जिवन धन ।

रास वृष्ण बहि मुगलि परो घर यशुदा देखन लोमान ॥
 विदमान हरि दक्षन श्वशुर गनि पैने गण न प्राण छूटि तन ।
 मुना यह दामरथ बी लउ नहि लाज भई मेरे मन ॥
 भगवान् जनि भयो नन्द जनि हान बान् पालिहाने जिन जिन ।
 मूर नन्द विरि कहु सधुपुरा तयाबहु सुत बरि बोहि जनन ॥

७२

वत्स तयायो तजि प्राण जिवन धन

वत्स तयायो तजि प्राण जिवन धन
 वत्स तयायो तजि प्राण जिवन धन
 वत्स तयायो तजि प्राण जिवन धन

मुरली नदि सुनिश्चय प्रज मे सुर नर मुनि नदि करत है बा ।
सूरदाम प्रभु के बिछुरे ते कोऊ नदि मोहने इत ।

— — — — —
७३ ✓ ६. ५

स्वात्मन कही ऐसी जाइ ।

भये हरि माधुपुरी राजा बड़े वंश कदाइ ॥

सून माग्य बदन बिरहदि वरणि बसुनौ तान ।
राजभूषण अङ्ग भोजन अदिर कहत लज्जान ॥
मानु विनु बसुनेन देवै नन्द यशुमनि नादि ।
गढ़ सुनन जल नैन द्वारन मीति कर पद्धिनादि ॥
मिली कृपिता भलै भैंटे सां भई अरधङ्ग ।
सूर प्रभु वंश भग नाके करन जाना वङ्ग ॥

— — — — —
७४ ✓ ६. ५

हरि की देखो जान न जाना ।

कही कल कही कथा स्वाम का जगिदि बिकल वृद्धन सैवराजी ॥
अब प्रज कूनो भया मिमिधर विनु गाढ़न मणि विभवाजी ।
दुग्धप्र प्रकाश नभा द्विन लीनर बिदुवन ग रत्नराजी ॥

श्री रामोरी हारी सोरभ मद्राह हानी ।
 श्री प्रभु सोरभ लज्जि राम मद्राह ही मद्राहानी ।

७५

श्री रामोरी सोरभ सोरभानी ।

श्री रामोरी सोरभ सोरभानी ।
 श्री रामोरी सोरभ सोरभानी ।
 श्री रामोरी सोरभ सोरभानी ।
 श्री रामोरी सोरभ सोरभानी ।
 श्री रामोरी सोरभ सोरभानी ।
 श्री रामोरी सोरभ सोरभानी ।

७६

श्री रामोरी सोरभ सोरभानी ।

श्री रामोरी सोरभ सोरभानी ।
 श्री रामोरी सोरभ सोरभानी ।
 श्री रामोरी सोरभ सोरभानी ।
 श्री रामोरी सोरभ सोरभानी ।
 श्री रामोरी सोरभ सोरभानी ।
 श्री रामोरी सोरभ सोरभानी ।

७७ ७६

यद्यपि मन समझावन लोग ।

शुद्ध होन नवनील देखि मेरे मोहन के मुख योग ॥
 निशिवागर ललितों ने लाई वासक लीला गढ़ ॥
 जैसे भाग बहुरि होई मोहन मोद लवाई ॥
 आ कारण गुनि ध्यान धरै शिव अंग विभूति लगावै ॥
 गो वासकलीला धरि गोकुल उखल साध बेधावै ॥
 विदग्ध नहीं बछ को दिग्दय हरि वियोग कयो मरिष ॥
 गुरवार प्रभु कमलनैन विनु बीने बिधि जग रदिष ॥

— — —

७८

नमस्तत्र श्रीगै टांकि बसाइ ।

देह बिदा भिक्षि आदि सगुनी जई गोकुल के गढ़ ॥
 नैनन कथ गयो कयो गुरुना नलदि बिदा लव गढ़ ॥
 गुरुनि दशम गनी है वा मरिष गुल गढ़ ॥
 लूथ मरान विदिन य गोकुल मनद लव गढ़ ॥
 गुरुन रनु नाम बादि वस वस लव गढ़ ॥

1.1

1.1.1

1.1.1.1

1.1.1.2

1.1.1.3

1.1.1.4

1.1.1.5

1.1.1.6

1.1.1.7

1.1.1.8

1.1.1.9

1.1.1.10

1.1.1.11

1.1.1.12

1.1.1.13

1.1.1.14

1.1.1.15

1.1.1.16

1.1.1.17

1.1.1.18

1.1.1.19

1.1.1.20

1.1.1.21

1.1.1.22

1.1.1.23

1.1.1.24

1.1.1.25

1.1.1.26

1.1.1.27

1.1.1.28

1.1.1.29

1.1.1.30

1.1.1.31

1.1.1.32

1.1.1.33

1.1.1.34

1.1.1.35

1.1.1.36

1.1.1.37

1.1.1.38

1.1.1.39

1.1.1.40

1.1.1.41

1.1.1.42

1.1.1.43

1.1.1.44

1.1.1.45

1.1.1.46

1.1.1.47

1.1.1.48

1.1.1.49

1.1.1.50

1.1.1.51

1.1.1.52

1.1.1.53

1.1.1.54

1.1.1.55

1.1.1.56

1.1.1.57

1.1.1.58

1.1.1.59

1.1.1.60

1.1.1.61

1.1.1.62

1.1.1.63

1.1.1.64

1.1.1.65

1.1.1.66

1.1.1.67

1.1.1.68

1.1.1.69

1.1.1.70

1.1.1.71

1.1.1.72

1.1.1.73

1.1.1.74

1.1.1.75

1.1.1.76

1.1.1.77

1.1.1.78

1.1.1.79

1.1.1.80

1.1.1.81

1.1.1.82

1.1.1.83

1.1.1.84

1.1.1.85

1.1.1.86

1.1.1.87

1.1.1.88

1.1.1.89

1.1.1.90

1.1.1.91

1.1.1.92

1.1.1.93

1.1.1.94

1.1.1.95

1.1.1.96

1.1.1.97

1.1.1.98

1.1.1.99

1.1.1.100

1.2

1.2.1

1.2.1.1

1.2.1.2

1.2.1.3

1.2.1.4

1.2.1.5

1.2.1.6

1.2.1.7

1.2.1.8

1.2.1.9

1.2.1.10

1.2.1.11

1.2.1.12

1.2.1.13

1.2.1.14

1.2.1.15

1.2.1.16

1.2.1.17

1.2.1.18

1.2.1.19

1.2.1.20

1.2.1.21

1.2.1.22

1.2.1.23

1.2.1.24

1.2.1.25

1.2.1.26

1.2.1.27

1.2.1.28

1.2.1.29

1.2.1.30

1.2.1.31

1.2.1.32

1.2.1.33

1.2.1.34

1.2.1.35

1.2.1.36

1.2.1.37

1.2.1.38

1.2.1.39

1.2.1.40

1.2.1.41

1.2.1.42

1.2.1.43

1.2.1.44

1.2.1.45

1.2.1.46

1.2.1.47

1.2.1.48

1.2.1.49

1.2.1.50

1.2.1.51

1.2.1.52

1.2.1.53

1.2.1.54

1.2.1.55

1.2.1.56

1.2.1.57

1.2.1.58

1.2.1.59

1.2.1.60

1.2.1.61

1.2.1.62

1.2.1.63

1.2.1.64

1.2.1.65

1.2.1.66

1.2.1.67

1.2.1.68

1.2.1.69

1.2.1.70

1.2.1.71

1.2.1.72

1.2.1.73

1.2.1.74

1.2.1.75

1.2.1.76

1.2.1.77

1.2.1.78

1.2.1.79

1.2.1.80

1.2.1.81

1.2.1.82

1.2.1.83

1.2.1.84

1.2.1.85

1.2.1.86

1.2.1.87

1.2.1.88

1.2.1.89

1.2.1.90

1.2.1.91

1.2.1.92

1.2.1.93

1.2.1.94

1.2.1.95

1.2.1.96

1.2.1.97

1.2.1.98

1.2.1.99

1.2.1.100

वधी इननी कहियो बात ।

तुम बिनु इसी कुँवरवर मेरे होत जिते जतपान ॥
 बकी अपामुर टरन न टारे बालक घनहि न जात ।
 सत्रपिज्वरी केहि मानों राखे निकसन को अकुमान ॥
 गारी गाय सकल सघु दीरघ पीन बरख कुरा गात ।
 परम अनाथ देखियत तुम बिनु केहि अवलविये प्राण ॥
 काहू काहू के देखत लख धौं अब कैम जिय मानत ।
 यह व्यवहार आजु लीं हे मज कपट नाट धुल टानत ॥
 समूह दिशि मे उदित होत है दावानल के कोट ।
 कौंशिन मृति उरन मग्गुल है नाम कवच है ओट ॥
 न सब दृष्ट होने अरि जेने भए एक ही पैट ।
 मन्वर सूर महाइ बरी अब मगुकि पुरातन टेंट ॥

लक्ष्मि देख तुम जानति जनकी तऊ मोहि बहि आवै ।
 माहि बहत तुम्हारे बान्हहि मागन-नोटी भावै ॥
 मेह पदतनो कर सागो जल ताहि देखि भञ्जि जाने ।
 सोइजो मागन सोइसोइ देखी मन मन करि करि न्हाते ॥
 मृग पण्डित, मुनि मोहि रैन दिन बह्यौ रहत छर सोच ।
 मेरो बलब लक्ष्मी सोहन है हे करत मेरोच ॥

८३

कुम्हार-प्रवास

लक्ष्मि देख तुम जानति जनकी तऊ मोहि बहि आवै ।
 माहि बहत तुम्हारे बान्हहि मागन-नोटी भावै ॥
 मेह पदतनो कर सागो जल ताहि देखि भञ्जि जाने ।
 सोइजो मागन सोइसोइ देखी मन मन करि करि न्हाते ॥
 मृग पण्डित, मुनि मोहि रैन दिन बह्यौ रहत छर सोच ।
 मेरो बलब लक्ष्मी सोहन है हे करत मेरोच ॥

रूपे, तुम मन्त्र का समावेश

१० शीर्षे वह मिष्टि आरम्भे, शान्त-वश विना
 ११ कारण तुम कहये माधो मा माधो ॥१२॥
 शिवनों बीच बिह परमाश्रय, जानन हो किधौ रण
 १३ शरणागत बहुर कहियन हो, मन्त्रन निकट राख दो।
 १४ वृद्धन अवलम्ब घेन को, किरी किरी कह्यो न हो।
 १५ मुमुक्षुनि मनोहर चितवनि, वैमं अर्चै न हो।
 १६ जाग तुमनि अह मुनि परमनिधि,
 १७ विधि पर कमलनयन जु बसत हैं, विधि निगुन न हो।
 १८ मृगनाम सो भजन बहाऊँ, जाहि दुसरो,

ऊँची, ना हम बिरहिन, ना सुन दास ।
 बरत सुनत बट प्रान रहत हैं, हरि तजु भजहु अवास ॥
 बिरहो मीन मरै जल बिहारे छाँदि जीवन की आस ।
 दाम भाव नहि तजत पपाँदा, बर सहि रहत पियास ॥
 पदुँ पाम पदुँ मे बिरह, बिधि बियो नाँव निरास ।
 राजब रवि ब' दास न मानत मसि सौँ सहज उदास
 ॥ गत जाति हस्यन्त जातिपाली प्रियतम ब' दनदास
 ॥ १२६ ॥ ६० ॥ १०००० ॥ १०००० ॥ १०००० ॥ १०००० ॥

निमित्त चकोर नैत नहि मावन, मयि जौवन जुग घीने
 म्यानि पतङ्ग देखि वतु जगन, भवे न प्रेम घट रीने ॥
 कहि अति, कयो रिमगनि वे वार्ने मरु जौ कहि मरुगति ।
 कैमे मारुगम हम शीर्षे, एक रेट के कात्रे ॥

+

+

+

८७ . . .

कहिदे ग्याम सो मरुमाइ ।

बह नलो नहि मावन मारुम मनौ मरुगरी पाइ ॥
 एक बार मावन के कात्रे गले में कटकाइ ।
 बाकी बिहग माना जिनि मारुन मावन मेटि बलाइ ॥
 कहि कहि इहे लख जगरी गे वसिष्ठ के पाइ ।
 मरुगम का इजरी का जिय गयो वजन देसाइ

१९३५ २०६४ साहू एवं ज्ञानदास राम कृष्ण दाउ मैया ।

॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥

+

✱

45

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

४७५ १-६ देवि परमेश्वर महादेवि ।

[illegible]

(Faint handwritten notes at the bottom of the page)

此項工程，係由本局委託設計，現已設計完竣，即將開工。

第一、在“四清”中，要正确处理“四清”与“四化”的关系。

[illegible][illegible]

करत अन्याय न बरजौ कहूँ अरु मायन की बोरी ।
 अपने जियत नैन मरि देखौ हरि हलधर की जौरी ॥
 एक बेर है जाहु इहाँ लौ अनत कहूँ के उत्तर ।
 चारिहु दिवस आनि सुख दीजै सूर पहुनई सुतर ॥

— — —

९१ ✓

प्रज ते पावस पै न टरी ।

शिशिर बसंत शरद गत सजनी बीती औधि करी ॥
 छनै छनै घन परपत अप हर सरिता मलिन मरी ।
 कुमकुम कज्जल कीच बहै अनु कुचयुग पारि परी ॥
 ताहू में प्रगट बिषम भीषम अनु इतयो ताप मरी ।
 सूरदास प्रभु कुमुद चन्द्र बिनु बिरहा तरनि जरी ॥

+

+

+

९२ ७५

अब वर्षा की आगम आयो ।

ऐसे निठुर भयो नैदनदन सदेसा न पटायो ॥
 बादर घोर छटे चहुँ दिशि ते प्रलभ्य गरजि मनायो ।

एकै झूल रही मेरे जिय बहुरि नहीं बज छायो ॥
दादुर मोर पयोहा दोलत कोकिल शब्द सुनायो ।
सूरदाम के प्रनु सों कहियो नैनन है भर लायो ॥

९३ ✓

ब्रज पर बंदरा आये राजन ।

मधुबन को पठाए सुन सजनी फौज मदन लग्यो साजन ॥
प्रांसारग्न नैन चातकजल पिक मुख बाजे बाजन ।
बहुँ दिसि ते तनु विरहा घेरो अब कैसे पावतु भाजन ॥
कहियत हुने श्याम परपोरक आए शङ्कर के काजन ।
नूरदार भीपति की महिमा मधुरा लागे राजन ॥

९४

देसियत बहुँदिसि ते धन पेरों ।

मानो मल मदन के दधियन बल करि वन्दन कोरे ॥
श्याम सुभग तनु शुद्धत गदमद बगदर दोरे दोरे ।
बसत न पोन महाबलत पी मुख न कह्युं न
दल बनी बल निबसि नदन जन कुर कुर कुर दंत बर
मन निबसि बगदरि दंत हा कह्युं न कह्युं न

जब बलवान हूँ या ब्रज में कहाँ देव न ऐसी डारयो ।
 जब न मुनि भवनक लागे विधिना बहुति कम खवनारयो ।
 जब न मुनि करे को हमारी या ब्रज कोऊ नाहि हमारयो ।
 मुदाम छवि दिखन विरहिली गोपिन पिडली प्रेम मैमारयो ॥

÷

—

+

९७ ✓

घुनि बन बोलन लागे मोर ।

जब संभार नन्दनन्दन को मुनि पाद को घोर ॥
 जिनको पिय पदम निधारी सो नित्य पगी निठोर ।
 मोहि बहुत दुख हरि दिहुरे को रहत विरह को जोर ॥
 चन्दक रिक्त बकोर पसीहा ए मध ही निति घोर :
 मुदाम प्रभु देनि न मिलहु जनन परत है घोर ॥

÷

+

+

९८ ✓

यहि बन मोर नहीं ए कामबान ।

विरह तेद घनु पुहुप भुङ्ग गुन करित तरैया विपु मनान ॥
 लयो घेरि ननो नृग बहु दिशि ने खचक खदेरी नहि खडान ।
 पुहुप मेन घन रचित पुगज मनु कांडन कैसा बन निधान ॥

महापुरुषित मन मदन प्रेमरस जनेगि मरे मैं मैं नैन उव
इदि अचस्था मिले सूरशम प्रभु बहुरो नानागदै मोहरन

९९

मर्षी री आतक मोदि जियावन ।

जैमेहि रैन रटति पिय पिय नैमेही बड़ पुनि पुनि गवन ॥
अतिदि सुकण्ठ दाहु प्रीतम को तारु जीम मन बावन ॥
आपु न पीवन सुधारम मजनी विरहिनि कोति पिऊवन ॥
जो ए पदि सदाय न होले प्राण बहुत दुख पावन ॥
जीवन मफल सूर ताही को काज पराए आवन ॥

१०० ✓

आतक न होइ कोउ विरहिन नारि ।

अजहूँ पिय पिय रजनि मुरनि करि भूँडेहि मँगन वारि ॥
अति कृशगात देखि मरिय याको अहनिशि बागुी रदन पुकारि ॥
देखी प्रीति आपुरे पशु की आन जनम मानन नहि शारि ॥
अब पनि बिनु ऐसा लागन यह क्यों मरकर गोभिन चित वारि ॥
त्यों ही सूर जानिए गोपी जा न कृपा करि मिलहु मुरारि ।

बहुत दिन जीवो पपीटा प्यारो ।

८२

बासर रैन नौव लै बोलत भयो विरह ज्वर कागो ॥
 आपु दुखित पर-दुखित जानि जिय घातक नावें सुन्दारो ॥
 देखो सकल विचारि सगरो जिय पिछुरन को दुख न्यागो ॥
 जाहि लगै सोई पै जानै प्रेम पाण अनियारो ॥
 सरदास प्रभु स्वाति बूँद लगि तज्यो सिंधु करि म्यारो ॥

+

+

+

१०१ ✓

हौं तौ मोहन के विरह जरी रे तू कत जागत ।
 रे पापी तू पंखि पपीहा पिउ पिउ पिउ अधगति पुकारत ॥
 सब जग सुखी दुखी तू जल विनु तऊ न तनु की बिथहि बिचारत ।
 कहा कठिन करतूति न समुझत कहा मृतक अवलनि शर मारत ॥
 तू शठ चकत सतावत काहू होत उहै अपने उर आरत ।
 सूर श्याम विनु ब्रज पर बोलत हठि अगिलंक जनम भ्रिगारत ॥

+

+

+

१०२

शरद समैह श्याम न आए ।

को जानै काहे ते मत्तना कहें विरहिन बिगनाए ॥

महासुदित मन मदन प्रेमरस चमेगि मरे मैं मैं जान।
इहि अवस्था मिले सूरदाम प्रभु बदर्शो नानागदौ ओदनदान।

९९

सखी री बातक मोंहि नियावन।

जैमंहि मैं रटनि पिय पिय मैमंहि वह पुनि पुनि गावन।
अनिदि सुकण्ठ दाहु पीतम का तारु जीम मन आवन।
आपु न पीवन सुधारम सजनी बिरहिनि सोनि पियावन।
जो ए पदि सदाय न होने प्राण बहुत दुख पावन।
जीवन सकल सूर ताई को काज पाए आवन।

१०० ✓

आनक न हाइ कोउ बिरहिन नहि।

कहै पिय पिय हजान सुनि कहि मृदुहि माँगन व'र।
कनि कृष्णान गम्य बसि पाका अनीलास काया मर ॥ १०० ॥
इसी प्रीति व'र ॥ १०० ॥ का ॥ व'र ॥ म'र ॥ म'र ॥
कहै कोउ क'र ॥ १०० ॥ म'र ॥ म'र ॥ म'र ॥ म'र ॥
म'र ॥ म'र ॥ म'र ॥ म'र ॥ म'र ॥ म'र ॥

महामुदित मन मदन प्रेमरस समेंगि भरे मैं मैं जान ।
इहि अवस्था मिले सूरदास प्रभु बदरथो नानागदौ ओवनदान ॥

९९

मन्थी री खातक मोहिं जियावन ।

जैमंहि रैन रटति पिय पिय जैमंहि बह पुनि पुनि गावन ॥
अतिदि मुकण्ठ दादु प्रीतम का लाल जीभ मन लावन ॥
आपु न पीवन मुखरस सजनी बिरदिनि बोजि विखावन ॥
जोग पक्षि सहाय न होने प्राण बहुत दुख पावन ॥
जीवन मफल सूर लाही को काज पराए जावन ॥

१०० ✓

खातक न होइ कोय बिरदिन नहि ।

आजहं पिय पिय बजनि मरनि बरि भूटैहि मोगन बरि ॥
अनि दृगगान वैभ्य मयि बाका अरनिगि बाणी रटन पुकारि ॥
बसो प्रीति बसुन बसुन को जान जनम मानन मदि नहि ॥
अब बनिावनु गमा लागन पद जया मानन गामिन विन न ॥
आ ही मूर अनि गामी जा न कृपा करि मिलइ मूर ॥

महासुदिन मन मदन प्रेमरस उमैंगि भरे मैं मैं जान ।
इहि अवस्था मिले सूरदास प्रभु बदरयो नानागदै जीवनदान ॥

९९

सखी री बातक मोहि जियावन ।

जैमेहि रैन रटति पिय पिय तैमेही बह पुनि पुनि गावन ॥
अतिहि सुकण्ठ दाहु प्रीतम को तारु जीभ मन लावन ।
आपु न पोवन सुधारस सजनी बिरहिति बोलि पिआवन ॥
जो ए पक्षि सहाय न होते प्राण बहुत दुख पावन ।
जीवन मफल सूर ताही को काज पराए आवन ॥

१०० ✓

बातक न होइ कोउ बिरहिन नारि ।

अजगूँ पिय पिय रजनि सुगनि करि भूटेहि माँगन वारि ॥
अनि कुरागान देखि मरि याको अटनिशि बाग्यी रदन पुकारि ।
देखी प्रीति बागुरे पशु की जान अनम मानन नहि नारि ॥
अब पनि बिनु ऐसा लागन सह क्यों मारव मोहित बिन वारि ।
स्यों ही सूर जानिय गोपी जो न कृपा करि मित्रद सुगारि ॥

कदम्ब कदम्ब कामी कुन्दमिन दिवि लक्ष्मण भवि उवरा
 मर मरिका मागार उव उववव कविपुत्र कमर मुन्द
 कद्वे मरुतु मरुन्द कन्द इति दारुदगम जिग
 विद मर गुरु मरु निद्रि मुन्दरि रवि मरि मोद मिरा
 मूनी मेव दुषार जमव विरहाम चन्दन वरा
 कद्वजदि काम मूर मित्रिबे को मर उवनाय वाप

x

x

x

१०३ ✓

छूटि गई शरीर शोन्चवाई ।

मनुमोहि मारि भसम कियो चाहत साजन मनो कलहु ठहु ह
 पाहि ते इयाग कदम्ब देखिये मानो धूम गहो लफ
 ता ऊपर दो देत किरानि उर उदुगल काउने यदि इन को
 राहु केतु दाउ जोरि एक करि कहि इहि समै जरावदि प
 धमे ते न पधि आन पाषमे कहत मूर विरहिन दुखत

x

x

x

१०४

यह शरीर शीतल काहे ने कहियत ।

मोनहेत जम्बूज आनमिदुन गाने ताहिन कहियत ।

विरहिन कर कमलनि प्राप्त बहूँ अपकारी रथ नदियत ।
 गुहास प्रभु मधुवन गौने सो इतनी दुख सहियत न ।

१०५

बोऊ करजोरी या बन्दहि ।

काली गंध करत हग ऊपर कुमुदिनि कुल जानदहि ॥
 बग बगो बगो रथि तमवर कमलबलाहक बगै ।
 बल न अपल रहत धारै रथ विरहिन के तनु ऊरै ॥
 नद नैल रहति पल्लव बो लीलनि बगल बहैरहि ।
 हेत जागिरा उरा देटी बो राहु के न बिनि डोली ॥
 मदी ललानि मीन तनु ललपति के रीत नहि कलकलनि ॥
 गुहास प्रभु जानि मिलिबहु कोन करन राखनि ॥

101

102

उरुव-मंदेश

पक्षिने प्रनाम नैदराइमी ।

ता पीछे मंगे वात्सागन कहियो जमुमति माइ सौं ॥
 एक बार तुम बरमाने सौं जाइ सपै सुनि सीसौ ।
 करि गुाभानु महति सौं मेरी समाचार सब दीसौ ॥
 आ रामा आदि सकल स्वाजन की मेरे दिन दिन मंडियों ।
 गुण्य मंदेस गुनाइ-गुननि की दिन दिनको दुख मंडियों ॥
 मित्र, एक मन बसन हमारे नादि मित्रे सुख पाइसौ ।
 करि करि समाधान नीकों विनि सांदि का साथी जाइसौ ॥
 करि नष्ट अनि तुम राखन कुल सौं हैं नई क नम सारी ।
 कृपकृतन बनि रहति निरन्तर कबहुँ न बानि निगारी ॥
 हकी सौं समुदाय पकर करि जानन मन का बीना
 नृपन स स्व सौं सौं कल सौं कदा सकल सब जीना ।

१०७ ✓

उधो, तुम मज को दसा विपारी ।
 मरिहं यह मिटि आपनी, जोग बधा बिपारी ॥
 हा बरन तुम पटये माथी, सो सोची जिय माथी ।
 बिपरी सोच विरह परमाग्रह, जानत हो बिपरी नाथी ।
 तुम परदीन अतुर बहि दल हो, सतन निबल रहत हो ।
 एक दूरन अमलद सेन बी, पिरि पिरि बला गहन हो ।
 हा तुमबानि मनाहर बिपबानि, देखे ज ते हारी ।
 जग उनीस एक मुकति परगति हो, बा मुरही पर धारी ।
 मरि का बरननदम अमल है, निरि निर्जन कहे कही ।
 मरिहो को बरन दसरी, जहि दुनरी नाथी ।

पकज परम पक में विहरत, विधि कियौ नोर निराम ।
 राजिब रवि को दोष न मानत, मसि सौं सहज वराम ॥
 प्रगट प्रीति दमरुध प्रनिपाली, प्रियतम की वनचाम ।
 मुरग्याम सौं प्रनिघन कोन्हौ, छाड़ि जगत्-वपशाम ॥

— — —

१०९

सब जग तज प्रेम के नाते ।

जातक भवानि सूर नहि छाड़ित, प्रगट पुकारत नाते ॥
 समुझत भीत नीर की मारें, तजत मान हठि हारत ।
 जानि कुरंग प्रेम नहि त्यागत, जदपि स्थाय मर मागत ॥
 तिमिर जकोर नैन नहि लावन, समि भौवन जुग कीने
 भवानि वनग देखि बगु मारत भये न प्रेम घट रीने ॥
 कहि अति, कया विमरतिचे वाने, मग ता कहि मरग जौ
 देम मुरग्याम वस छाड़ि एक नद न काँजे

मगर-जाहि नीके समुभेंगी मेरो बचन बनाउ ।
 वसायी मेरो इन बातनि उनही जाह मिभाउ ॥
 हो मुख मया म्यामसुन्दर को थारु जिय अति सतिभाउ ।
 ए बारष आसुर इन नैनन यह मुख जानि देखाउ ॥
 ओ कोइ कोटि कर केमेहु विधि बिद्या द्यौमाउ ।
 हासुन भूरा सीत के जल दिनु नादिन कोर उपाउ ॥

×

×

×

१११ ✓

भो, मकर जन्म ले करो छेगिरी बहुत दुखनी ।
 कोइ विमानि सिगति न पाये, जो मय जलन करि हारी ॥
 भिन्न-भेद मया सृजितोप न मिलसति दिख दिख को भानी ।
 कोइ मरु दिख कोइ मयाभी मरु दृष्ट-क रङ्ग मयाभी ।
 कोइ कोइ मयाभी मयाभी कोइ कोइ मयाभी मयाभी ।
 कोइ कोइ मयाभी मयाभी कोइ कोइ मयाभी मयाभी ।

जैसे सुमन-वास है आवन पवन मधुर अनुगामी :
 अति आनन्द होत है जैसे अंग अंग सुखरागी ॥
 क्यों दूरवन में दूरवन देखत दृष्टि परम कवि लागी ।
 जैसे 'सूर' मिले हरि हृमकं विरह-व्यथा तनु रोगी ॥

११३

क्यों, जोग जोग हम माही ।

अबला मार ग्यान कहा जानी, कैसे ध्यान धराही ॥
 ते ए मूर्खन नैत कहत हैं, हरि-मूरति जा माही ।
 लम्बी कथा कपट की मनुकर, हम ते सुनी न जाही ॥
 स्वयन नीर अह जटा लोभाबद्ध, ए दुख कौन समाही ।
 अत्यन्त तमिर् अंग भसम बनावन, विरह अतल अति दारी ॥
 जाली भस्मन जेदि लागि भूने मा नो दे अतु माही ।
 'सूर कव' मे ग्यां न वल दिन, ज्यो गद ते वाडोही ॥

११४

११५ - ११६

भूमिहि जित्ति आवहि यदि गोकुल तत्र रैनि ज्यों चन्द ।
 गुनर वदन रसम कोमलतनु क्यों मटिहें नैदनन्द ॥
 मधुर मोर प्रदल पिक पानक वन उपवन यदि बोलत ।
 मरुं गिरि की गज मूनन गो वत्स दुखित तनु टोलत ॥
 कामन मरु जनुल दिय कहि भग भूषण विविध विहार ।
 जित्ति जित्ति पिरत दुसहु द्रुम द्रुम प्रतिधनुष धरे मनु गार ॥
 दुन हो गन्त मदा उपवारी जानित हो मय रीति ।
 गुह्य मज्जाय कहे लो उयो नहि ज्यारै रीति ॥२॥

x

x

x

११५

गुह्य मज्जाय कहे लो उयो नहि ज्यारै रीति ।

कान्त कृत सात भरे ल लम दिन परम दुखारी गार ।
 उल्लास कल्पित दाह कान्तै दुखित रीति गार ।
 उरि कान्त मज्जाय कहे लो उयो नहि ज्यारै रीति ।
 उल्लास कल्पित दाह कान्तै दुखित रीति गार ।
 उरि कान्त मज्जाय कहे लो उयो नहि ज्यारै रीति ।

[illegible][illegible]

मनु यमुनि-सहित ब्रजपति परे धरणि मुरझाइ ।
 कति दिवस तनु प्राण त्यागन करै फलु गति आइ ॥
 मवन गुरुमी यूथ दिन प्रति रुदति पुर दिश धाइ ।
 हरी जटी दुटि घन चराई मरति तहाँ बिललाइ ॥
 पास प्यास शब्द राधिका लई गृह दुग्न लाइ ।
 दहत चक्र न बक्र चर्य विनु करै फोटि उपाइ ॥
 योगपद लै हेंद्र योगिनि हमहि योग मिलाइ ।
 मधुष विदुरं बारि मीनहि जनत कहा सोटाइ ॥
 क्राहु जेहि विधि रयाम जायै बटी नेहि विधि जाइ ।
 सुरदाम विराट ब्रजजन जरत लहु सुभाइ ॥

— — —

११९ ✓

उद्धव-संदेश

कति दिवस तनु प्राण त्यागन करै फलु गति आइ ॥
 मवन गुरुमी यूथ दिन प्रति रुदति पुर दिश धाइ ।
 हरी जटी दुटि घन चराई मरति तहाँ बिललाइ ॥
 पास प्यास शब्द राधिका लई गृह दुग्न लाइ ।
 दहत चक्र न बक्र चर्य विनु करै फोटि उपाइ ॥
 योगपद लै हेंद्र योगिनि हमहि योग मिलाइ ।
 मधुष विदुरं बारि मीनहि जनत कहा सोटाइ ॥
 क्राहु जेहि विधि रयाम जायै बटी नेहि विधि जाइ ।
 सुरदाम विराट ब्रजजन जरत लहु सुभाइ ॥

मगट पति गिनु मान प्रभु जन प्राण गुम आपीन ।
 भों चकोरहि भोंग चकोरी चित चरहि लीन ॥
 स्व रसन गुगम्भ परसन ठनि न इन्द्रित आत ।
 दानि हीन न ताहि चित की कियो जिन मधुमान ॥
 है गण मन आगुरी मय गिन गुन मन ईरा ।
 ज्ञान की अज्ञान कथा तुल्य तोरि कीजै शीरा ॥
 लट्ठन कहा चरैहि केरांगार परम प्रवीन ।
 गूर गुगन मयीहि है जही चितन जल बिन मीन ॥

५

५

५

१२० (१८००)

अथ कांडि अचिनचन मत मता ।

अथ कांडि अचिनचन मत मता मता का मता ।
 मैं कांडि मत कथा मता का मता मता मता ।
 कांडि मत मता मता मता मता मता मता ।
 मता मता मता मता मता मता मता मता ।
 मता मता मता मता मता मता मता मता ।

१२१

ऊधो तिहारें हैं अरण्य लखी
 बारूक यदि अरु बरिषी बिभावरौ ।
 निगिन लीए आर्य दिवस म भोजन भाव
 पितवत भग भई हृष्ट भावरौ ॥
 एक श्याम धिन बलू न भाई
 रगत पित्रत लैम बकल बावरौ ॥
 या शृन्दावन वपन श्याम विनु
 तहाँ यगुना बहै सुभग बावरौ ॥
 लाजि न होति एदै बलि जाती
 बलि न मकल आयै विरहताप री ।
 मूरदास प्रभु जानि मिलाबट्ट
 ऊधो कीरति होइ रावरौ ॥

१२२ ✓

५५

ऊधो तिहारें पाँइ लागति हौं कहियो श्याम सो इतनी बात ।
 इतनी दूर बसत क्यों विसरे अपनी जननी तात ॥
 जा दिन ते मधुपुरी सिधारे श्याम मनोहर गात ।
 ना दिन ते मेरे नैन पपीहा दररा व्यास अकुलात ॥

जहाँ खेतन को और तुम्हारे नन्द देवि मुरझान ।
 जो कबहुँ उठि जान सरिक लौं गाइ दुहावन प्राण ॥
 दुहत देवि औरन के सरिका प्राण निकमि नहि जान ।
 मुरझाम बहुरो कब देखौ कोमल कर दधि खान ॥

१२३ १०८

तब तुम मेरे काहे को आये ।

मधुरा क्यों न रहे यदुनन्दन जोपै काम्ह देवकी जाए ॥
 दूध दही काहे को चोरयो काहे को बन गाइ चराए ॥
 अब अरिष्ट काली नाहि काढ्यो विष जल ते सब मर्या जिआए ॥
 मुरझाम लोगन के भोरए काहे काम्ह अब होत पराए ॥

१२४ ✓ १०९

ऊधो हम ऐसे नहि जानी ।

सुन के हेत मर्म नहि पायो प्रगटे शारंगपानी ॥
 निशिवासर छानी सां जाई बालक लीला गाई ।
 ऐसे कबहुँ भाग होहिगे बहुरो गोद खेलाई ॥
 को अब ग्वाल मर्या मझ लीन्हें साँझ समै ब्रज आवै ।
 को अब चोरि चोरि दधि लैदे मैथ कवन बोलाई ॥

विश्व-महिषासुर की छाती हरि विभोग क्यों सहिए ।
मृगमन कब नैशानन्दन दिनु कहों पौन विधि रहिए ॥

१२५ ✓

रघो जो बस काफ़ न देखें ।

१. 'हृदय' का शब्द 'हृदय' विचारों हम अतिही दुख देते ॥
२. 'हृदय' का शब्द 'हृदय' विचारों हम अतिही दुख देते ॥
३. 'हृदय' का शब्द 'हृदय' विचारों हम अतिही दुख देते ॥
४. 'हृदय' का शब्द 'हृदय' विचारों हम अतिही दुख देते ॥
५. 'हृदय' का शब्द 'हृदय' विचारों हम अतिही दुख देते ॥
६. 'हृदय' का शब्द 'हृदय' विचारों हम अतिही दुख देते ॥
७. 'हृदय' का शब्द 'हृदय' विचारों हम अतिही दुख देते ॥
८. 'हृदय' का शब्द 'हृदय' विचारों हम अतिही दुख देते ॥
९. 'हृदय' का शब्द 'हृदय' विचारों हम अतिही दुख देते ॥
१०. 'हृदय' का शब्द 'हृदय' विचारों हम अतिही दुख देते ॥

१२६

उद्यम-सन्देश

१. 'हृदय' का शब्द 'हृदय' विचारों हम अतिही दुख देते ॥
२. 'हृदय' का शब्द 'हृदय' विचारों हम अतिही दुख देते ॥
३. 'हृदय' का शब्द 'हृदय' विचारों हम अतिही दुख देते ॥
४. 'हृदय' का शब्द 'हृदय' विचारों हम अतिही दुख देते ॥
५. 'हृदय' का शब्द 'हृदय' विचारों हम अतिही दुख देते ॥
६. 'हृदय' का शब्द 'हृदय' विचारों हम अतिही दुख देते ॥
७. 'हृदय' का शब्द 'हृदय' विचारों हम अतिही दुख देते ॥
८. 'हृदय' का शब्द 'हृदय' विचारों हम अतिही दुख देते ॥
९. 'हृदय' का शब्द 'हृदय' विचारों हम अतिही दुख देते ॥
१०. 'हृदय' का शब्द 'हृदय' विचारों हम अतिही दुख देते ॥

एक बेर बंदूरो मज आबहु दूष पनूनी लहु।
मूर मुपय गोकुल जो बैठहु उरति मधुपुरी अंहु॥

१२० १०३

कहियो यमुनवि की कलसीम ।

जहाँ रही तहाँ पर साहितो जीयो कोटि शोन ॥
मुरली रई सोडनी घृत मरि उषो हरि लई सोम ।
हर घृत तो उनही मुरभिन को जो प्यारी अलीस ॥
रधी बलत सखा मिनि आए गगनदास दस दोस ।
अपके यही मज केरी बसने मरदान के ईस ॥

उयो,

इह इह मग जोरनि आद ।
बिन बाध बाध ।
अब औ कहा चिरी ।
गुनि निव मन्त्रा ।
कैव मिष्टी 'मूर' के ।

एक धेर बहुरो ब्रज आवहु दूध पनूसी खाहु ।
सूर सुपथ गोकुल जाँ बैठहु उलटि मधुपुरी जाँहु ॥

१२० १०३

कहियो यशुमति की आशीस ।

जहाँ रहो तहाँ पर लाड़िलो जीवो कोटि बरीस ॥
मुरली दई दोहनी घृत भरि ऊधो घरि लई मीस ।
इह घृत तो उनहीं सुरभिन को जो प्यारी जगदीस ॥
ऊँधो चलत मखा मिलि आए ग्वालवाक दस बीस ।
अपके यहाँ ब्रज केरि समावो सूरदाम के ईस ॥

१२८ १०४

ऊधो, ज्योभिर्या अनि अनुरागी ।

इक टक मग जोवति अह रीवनि भूलेहु पलक न लागी ॥
बिन पावस पावस रिनु आई देखत हैं विदमान ।
अब धौ कहा कियो चाहत है लईहु निरगुन ग्यान ॥
सुनि प्रिय सखा स्वाममुन्दर के जानन मकल सुभाइ ।
जैसे मिलैं 'सूर' के स्वामी मैमो करहु उपाइ ।

गोवर्द्धन- प्रभु जानिकैं, ऊधो
ऊधो ब्रज को नैन-प्रेम, बरने
उमरयो नैनननार, बात कुछ
सूर स्याम भूलत भये, रहे नैन
पोंछि पीतपट सो कस्यो, भले

१ - - ४ -

१३०

हमारे श्याम-चलन के
धुवन बसत आस हली सजनी अब
मौने न ही मौन सुनि आई किहि हरन
नगहि सबे-धलो माधव के नातो मो
क्षिण दिगुं यानगर द्वारक सिंधु
रदास प्रभु विनु क्यों जावों जात है

४ - - १ -

जैन-नर अनाथ हारै ।

दल गोपाल ने न स जने सो न मन
जलधर हम से न च न मे

- ४ — जोगन्धरा ॥ जोगन्धरा का उल्लेख । परमारथ ॥ मोक्ष मार्ग
पुनर्नि ॥ पुनः । मुहनि ॥ मुक्ति मोक्ष । चारी ॥ निष्कारण कारण
हैं । निगुण ॥ माध, राम श्रीराम लमोणुष से परो निराकार मन्त्र
बदाऊ ॥ ब्रह्म हैं ।
- ५ — बर ॥ शरीर । अकारा ॥ (आकार) शून्य स्थान, निराधार स्थान
वक्त ॥ ब्रह्म, भक्त हो । शक्तिव ॥ कर्मज । उद्गम ॥ निरिच्छ ।
- ६ — रगति ॥ स्थातिनक्षत्र, कहन है इसी नक्षत्र में चरती हुई ब्रह्म की
क्रीड़ा पीता है । अथ नक्षत्र कह नक्षत्र नहीं जाना नक्षत्र नक्षत्र कह
स्वाप्ता ही 'वी' 'वी' इत्यादि रहना है । जाने ॥ निमित्त से । पुराण ॥
मूल । अथाच ॥ अद्वैतिया । मर ॥ (मर) मरण । निमित्त ॥ पञ्चक ।
अ.यन ॥ देखने दृष्टि । वपु ॥ शरीर । रीति ॥ आजी । कीर्ति ॥ विषे ।
- ७ — अदि ॥ भोग, यही उद्गम न आद्य है । भीरु ॥ भक्ती भोगि ।
बनाउ ॥ बनावट, रचना । चारु ॥ एक बार । श्वो ॥ शत्रुघार ।
- ८ — अरति ॥ गद्दी हानी है, शान्त हानी है । निमित्त ॥ पञ्चक ।
बाह ॥ बाहु नख धार । मन्त्रावा ॥ अत्र न लक्षण की सीक ।
अ.यन ॥ देख दृष्टि
व ॥ वपु ॥ शरीर ।
- ९ — अ.यन ॥ देख दृष्टि । अ.यन ॥ देख दृष्टि । अ.यन ॥ देख दृष्टि ।
अ.यन ॥ देख दृष्टि । अ.यन ॥ देख दृष्टि । अ.यन ॥ देख दृष्टि ।
अ.यन ॥ देख दृष्टि । अ.यन ॥ देख दृष्टि । अ.यन ॥ देख दृष्टि ।

